1 पतरस

पतरस प्रेरित द्वारा लिखा गया पहला पत्र

लेखकः

पतरस, जो यीशु के आरम्भिक प्रेरितों में से एक था।

समयः

65 और 67 ईस्वी के बीच।

विषयः

उसे यहूदियों को संदेश देने के लिए भेजा गया था गल. 2:8-9. इसलिए उसने यीशु पर विश्वास लाने वालों को यह चिट्ठी लिखी थी। लेकिन सच्चाई यह है कि उसने जो लिखा, वह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से था। इसलिए लिखी बातें सभी युगों के लोगों के लिए हैं। लूका 22:31-32 में यीशु ने उसे जो आदेश दिया था, उसने कुछ अंश में यह लिखने के द्वारा पूरा किया। यहाँ जो कुछ पतरस ने लिखा था, उसके द्वारा असंख्य लोगों की हिम्मत बढ़ी। कुछ खास शब्द हैं: 'आशा', 'यातना या दुख', 'अनुग्रह या कृपा', 'महिमा या आदर-सम्मान'। इस में मुख्य विषय है विश्वासियों की यातना और भविष्य के अच्छे दिन।

1 पतरस की तरफ़ से जो यीशु मसीह का प्रेरित है उन परदेशियों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, एशिया और बिथुनिया में परदेशी हैं। 2परमेश्वर पिता तुम्हें बहुत पहले ही से जानते थे और उन्हों ने दूसरे लोगों से तुमको अलग किया है। इसलिये तुम ने उनकी बात मानी और यीशु मसीह के खून से तुम शुद्ध किये जा चुके हो। परमेश्वर की ढेर सी कृपा और शान्ति तुम्हें मिले।

3हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिन्होंने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा में नया जन्म दिया है। 4अर्थात् एक न मिटने वाली और अमर विरासत के लिए जो

1:1 "प्रेरित"- मत्ती 10:2.

"परदेशियों"- पतरस यूनानी भाषा में एक टेकनिकल 'डायस्पोरा' शब्द का उपयोग करता है जिसका अर्थ है वे यहूदी जो पलश्तीन के बाहर रह रहे थे (यूहन्ना 7:35)। जिनको पतरस लिख रहा था, वे मसीह के अनुयायी हो चुके थे। पतरस यहूदियों के लिये प्रेरित था (गल. 2:7-8) और वह अपने पत्रों में यहूदी मसीहियों को निर्देश देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पेन्तेकुस्त के दिन उन में से कुछ लोगों ने सुसमाचार सुना था (प्रे.काम 2:9)।

"पुन्तुस... बिथुनिया"- ये सभी उन क्षेत्र में थे, जिन्हें तुर्किस्तान कहा जाता है।

"परदेशी"- 2:11; इब्रा. 11:9,13. मसीह में विश्वासी इस संसार में अपनापन नहीं महसूस करते हैं। उनकी नागरिकता स्वर्ग में है (फ़िलि. 3:20)।

1:2 "पहले...थे"- रोमि. 8:29 की टिप्पणी और रोमियों के अन्त की टिप्पणी देखें। इस पद में त्रिएकत्व के तीन व्यक्तियों को देखें (मत्ती 3:16-17 आदि के नोट्स)। यहाँ विश्वासियों के उद्धार के विषय कई बातें कही गयी हैं। हम इसका कारण और शुरूआत देखते हैं - परमेश्वर का चुनाव।

हम इसका तरीका और प्रक्रिया देखते हैं - आत्मा का कार्य हम इसका उद्देश्य और लक्ष्य देखते हैं - मसीह की आज्ञाकारिता हम इसका माध्यम और आधार देखते हैं - मसीह का खून 2 थिस्स. 2:13-14 से तुलना करें।

"अलग किया है"- मत्ती 24:22,24,31; यूहन्ना 17:6; इफ़ि. 1:4.

"उनकी बात मानी"- परमेश्वर की बुलाहट का उद्देश्य और परमेश्वर के आत्मा का कार्य है, मसीह के प्रति आज्ञाकारी बनाना। प्रे.काम 22:10 की टिप्पणी देखें। ध्यान दें कि यह मसीह के रक्त के छिड़काव से पहले है। हम उसे पुत्र और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करते हैं इसलिए उनके खून के द्वारा धोए जाते और अलग किये जाते हैं। इसके पश्चात् परमेश्वर जीवन भर प्रेम से प्रेरित आज्ञाकारिता को देखना चाहते हैं (यूहन्ना 14:15,23; रोमि. 1:5)।

"शुद्ध किये"- यूहन्ना 17:17-19 में पवित्र करने पर टिप्पणी। लैव्य. 20:7 भी देखें। परमेश्वर का आत्मा इस संसार में विश्वासी को अलग करता है, पाप के विषय में कायल करता है, मन परिवर्तन के स्थान पर लाकर नया आत्मिक जीवन देता है और सत्य सिखाता है (यूहन्ना 3:5-8; 16:7-15)।

"शुद्ध किये जा चुके"- पुराने नियम में पशुओं के लोहू का छिड़काव तीन बातें दिखाता थाः शुद्ध किया जाना (लैव्य. 14:1-7) याजकों का अलग किया जाना (निर्ग. 29:20-22) परमेश्वर की वाचा की पुष्टि (निर्ग. 24:1-8) मसीह के खून से विश्वासी क्षमा किये गये और गुनाहों से धोए गए (इफ़ि. 1:7; इब्रा. 9:14; 1 यूहन्ना 1:7)। मध्यस्थ के रूप में उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में पूरी छूट मिली है (इब्रा. 10:19-22) और वे नयी वाचा के भागीदार बनाए गए हैं (मत्ती 26:28; इब्रा. 12:24)।

1:3 "परमेश्वर और पिता"- इफ़ि. 1:3.

"मरे हुओं में से जी उठने"- मत्ती 28:6; प्रे.काम 1:3; 2:24; रोमि. 1:4; 1 कुरि. 15:12-19.

"दया"- तीतुस 3:5; इफ़ि. 2:4.

"जीवित आशा"- रोमि. 5:2; 8:24-25; तीतुस 1:2.

"नया जन्म"- यूहन्ना 1:13; 3:3-8; इफ़ि. 2:5; याकूब 1:18; 1 यूहन्ना 3:9; 4:7; 5:1.

1:4 "न मिटने वाली"- विरासत इस सृष्टि की नहीं, और न ही ऐसी कुछ वस्तु है जो नाशमान हो (1 कुरि. 15:50,53), परन्तु अविनाशी और सनातन है।

"विरासत"- मत्ती 25:34; प्रे.काम 20:32; इफ़ि. 1:14; कुल. 1:12; इब्रा. 1:14; 6:12; याकूब 2:5. केवल परमेश्वर की सन्तान को नये जन्म के कारण मीरास मिलती है। जो लोग मसीह के लिये इस संसार का त्याग कर रहे हैं, वे लोग ऊपरी जग की मीरास को हासिल करेंगे (मत्ती 19:27-29)। सर्वप्रथम तो परमेश्वर स्वयं मीरास हैं (उत्पत्ति 15:1; भजन 16:5; 73:25-26; विलाप. 3:24), इसके पश्चात् दूसरी अन्य बातें हमारी मीरास हैं (प्रका. 21:7)।

तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी है। 5जो परमेश्वर
की ताकत (सामर्थ) से विश्वास के द्वारा
उस मुक्ति के लिए सुरक्षित रखे गए हैं, जो
आने वाले समय में प्रगट होने वाली है।
6इस वजह से तुम मगन होते हो हालांकि
ज़रूर है कि तुम इस समय तरह-तरह की
परीक्षाओं (परेशानियों) की वजह से उदास
हो। 7यह इसलिए कि तुम्हारा परखा हुआ

"तुम्हारे...है"- कोई और ले नहीं सकता, छीन नहीं सकता, और न चुरा सकता है। परमेश्वर ने यह मीरास विश्वासियों के लिये रखी है। जो यह विश्वास करते हैं कि स्वर्ग में उनकी ऐसी मीरास है, उन्हें इस संसार की हर वस्तु का मोह नहीं रखना चाहिये।

1:5 "विश्वास के द्वारा"- यूनानी शब्द, सेना में उपयोग में लाया जाने वाला शब्द है। परमेश्वर की सामर्थ, सुरक्षा है। वह सेनाओं के परमेश्वर हैं जिसके अधिकार में स्वर्ग की समस्त सेना है, और वह अपने सामर्थी दूतों को विश्वासियों की सेवा करने के लिये भेजते हैं (इब्रा. 1:14; भजन 91:11-12)। वह इस संसार की और अनदेखे आत्मिक संसार की बातों का प्रबंध करता है और कर सकता है ताकि उनके विश्वासियों की रक्षा हो और वे अन्त तक सुरक्षित बचाए जाएँ (यूहन्ना 6:39; 10:28-29)। यह उनके बेटे की प्रार्थना का उत्तर है (यूहन्ना 17:11-12; रोमि. 5:9-10; इब्रा. 7:25)।

यदि वे विश्वासी विश्वास से मुकर जाते हैं, क्या वे अपना उद्धार नहीं खोएँगे? परमेश्वर उन्हें "विश्वास" के द्वारा बचाते हैं। विश्वास परमेश्वर का वरदान है (इफ़ि. 2:8; फ़िलि. 1:29)। परमेश्वर के पास यह एक ऐसा हथियार है, जिसके द्वारा वह हमसे सम्पर्क रखते हैं। यह एक सिद्ध वरदान है और परमेश्वर ने जो कार्य हम में करने की योजना बनायी है उस कार्य के लिये यह पूर्ण रूप से उचित है। जो विश्वासियों को विश्वास देते हैं, वह उनके हृदय में विश्वास जीवित रखने योग्य हैं (लूका 22:31-32)। जब कुछ समय के लिये हमारा विश्वास डगमगा जाता है, वह हमारे विश्वास का नवीनीकरण करते हैं।

"आने वाले समय में"- परमेश्वर विश्वासियों को तब तक ही नहीं संभालते हैं जब तक कि वे पाप नहीं करते या कोई संदेह का विचार उनके मन में प्रवेश नहीं करता। वह उन्हें तब तक सम्भालेंगे जब तक उनका उद्धार पूरा नहीं हो जाता। यहाँ पतरस उद्धार के, भविष्य के पहलू की बात कर रहा है। विश्वासी मुक्ति पा चुके हैं (यूहन्ना 5:24; रोमि. 8:24; इफ़ि. 2:5; 2 तीमु. 1:9; तीतुस 3:5)। वे बचाए जा रहे हैं (1 कुरि. 1:18; 2 कुरि. 2:15), वे बचाए जाएँगे (रोमि. 13:11; फ़िलि. 1:28; इब्रा. 1:14; 9:28)।

1:6 "मगन"- अर्थात् आनन्दित। एक सच्चे मसीही होने के अनेकों चिन्हों के साथ एक है मसीह में आत्मिक आनन्द होना। यह भी परमेश्वर के लोगों के लिये उनका वरदान है। यह आनन्द वह प्रसन्नता नहीं है जो सब कुछ ठीक होने से हमारे मन में से निकलती है। यह अलौकिक आनन्द है। यदि हम ने इसका अनुभव कभी नहीं किया, तो यह इस बात का सबूत है कि हम ने मसीह पर कभी भरोसा नहीं किया (यूहन्ना 15:11; 16:24; 17:13; प्रे.काम 5:41; 8:39; 16:34; रोमि. 5:2-3,11; 14:17; 2 कुरि. 6:10; 8:2; गल. 5:22; 1 थिस्स. 1:6)। 'इस में' शब्द पर ध्यान दें। ये शब्द उन बातों की ओर संकेत हैं जो उसने तीसरे पद से कही हैं। लेखक कहता है कि है कि आनन्द चार बातों से आता है, पहला, नया जन्म; दूसरा, जीवित आशा; और तीसरा, स्वर्ग में रखी भविष्य की मीरास का ज्ञान; और चौथी बात है, हमें सभांलकर रखने वाली परमेश्वर की सामर्थ का आश्वासन।

"हालांकि"- ऐसे कुछ अनुभव हैं जो हमारे मनों में परमेश्वर के बहने वाले आनन्द को रोक सकते हैं। गुनाह (भजन 32:3-5; 51:3-4,8,12)। संदेह (मत्ती 14:29-31; लूका 24:37-38; याकूब 1:6)। गलत शिक्षा में गिरना एक और कारण है (गल. 3:1-3; 4:15-17)। परखा जाना भी कारण है (अय्यूब 3:1-26), हालांकि ऐसा होना आवश्यक नहीं। एक दृढ़ विश्वास कठोर परख के समय भी आनन्दित हो सकता है (प्रे.काम 5:41; 2 कुरि. 12:7-10; कुल. 1:24; याकूब 1:2)। उदासी और आनन्द एक ही समय में हो सकते हैं (2 कुरि. 6:8-10)।

1:7 सोने को आग से शुद्ध किया जाता है और परखा जाता है। परमेश्वर इसी कारण से विश्वासियों पर आग की तरह की परीक्षा की अनुमति देते हैं। तुलना करें भजन 66:10-12. विश्वास सोने से ज़्यादा मूल्यवान है। क्या यह दुख की बात नहीं कि लोग विश्वास की उपेक्षा

विश्वास जो आग से तपाए हुए बर्बाद न होने वाले सोने से भी कहीं ज़्यादा कीमती है, यीशु मसीह के लौटने पर बड़ाई, इज़्ज़त और महिमा का कारण ठहरे। 8तुम बिना यीशु को देखे उन से मोहब्बत रखते हो और बिना देखे विश्वास करके ऐसे खुश और मगन होते हो, जो बयान से बाहर और महिमा से भरा हुआ है। 9क्योंकि अपने विश्वास का नतीजा अर्थात् गुनाहों की माफी (मुक्ति) हासिल करते हो।

10इसी मुक्ति के बारे में उन भविष्यद्वक्ताओं ने होशियारी से जाँच पड़ताल की थी। 11उन्हों ने इस बात की खोज की, कि मसीह का आत्मा जो उन में था और पहले ही से मसीह के दुखों की और उसके बाद आने वाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर इशारा करता था। 12भविष्यद्वक्ताओं पर यह प्रगट किया गया था कि वे अपनी नहीं, लेकिन तुम्हारी सेवा के लिए ये बातें कहा करते थे उन बातों की खबर अब तुम्हें उन से मिली जिन्होंने स्वर्ग से भेजे

करते हैं और सोने और संसार की अन्य वस्तुओं के पीछे जाते हैं? विश्वास इतना मूल्यवान इसलिए है, क्योंकि यह स्वर्ग के अनन्त धन को हासिल करता है।

"परखा हुआ"- विश्वास का परखा जाना। (यहाँ प्रयुक्त यूनानी शब्द पद 6 के यूनानी शब्द से एक दम भिन्न है।) इस से यह प्रगट होता है कि हम वास्तव में विश्वास करते हैं या नहीं, या केवल ऐसा सोचते और कहते हैं। जब हम आग जैसी परीक्षाओं में से होकर गुज़रते हैं और विश्वास में बने रहते हैं और संसार की ओर नहीं फिरते, तब यह इस बात का पक्का सबूत है कि हमारा विश्वास सच्चा है। तुलना करें मत्ती 13:21,23; इब्रा. 10:32,39.

1:8 "मोहब्बत"- यूहन्ना 14:15; 21:16; 1 कुरि. 13:7; 16:22; गल. 5:6 - विश्वास सच्चा है इसका यह एक और प्रमाण है। सच्चा विश्वास और मसीह के लिये प्रेम, साथ-साथ चलते हैं। यदि हमारे पास एक नहीं है, तो हमारे पास दूसरा भी नहीं होगा।

"बिना देखे"- जिसे हम ने कभी देखा नहीं, उन से प्रेम करना, उन पर विश्वास करना क्या संभव है? यह संभव है। हमारे पास मसीह का वचन है, और उनका आत्मा उन्हें विश्वासियों के लिये वास्तविक बनाता है।

"खुश"- पद 6, नहे. 8:10; भजन 4:7; 16:11; 21:6; 28:7; 43:4; 81:1; यशा. 12:3; 35:6,10; लूका 2:10; यूहन्ना 16:20-24.

1:9 "हासिल करते हो"- पद 5 - परखे जाने के बीच विश्वासी मुक्ति का अनुभव करते रहे हैं और यहाँ के पश्चात् और अधिक पूर्णता में अनुभव करेंगे।

1:10 "भविष्यद्वक्ताओं"- पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता (उत्पत्ति 20:7 के नोट्स को देखें)। उन्हों ने उस कृपा के विषय में लिखा जो विश्वासियों के लिये अभी है। उनके लेख यीशु और उनके द्वारा लाए जाने वाले उद्धार की भविष्यद्वाणियों, चित्रों, प्रकारों और छाया से भरे हैं। (लूका 4:17-21; 24:25-27,45-47; यूहन्ना 5:39,46; इब्रा. 8:5; 10:1)।

1:11 पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में मसीह का जो आत्मा था उसने उन्हें वह सब लिखने के लिये प्रेरित किया था जिसे वे स्वयं समझते न थे। उन्हों ने समझने के लिये स्वयं के लेखों की छानबीन की। ध्यान दें, मसीह का आत्मा मसीह के आने से पहले इस दुनिया में था। उसने मसीह के दुखों और महिमा के विषय में पहले से कहा। उदाहरण के लिये भजन 22:1-21 में उनके दुखों का वर्णन है, 22-31 में महिमा है। यही बात यशा. 53 के विषय में सच है। पद 1-9 में दुख है, 10-12 में महिमा। दुख और महिमा यशा. 52:13-15 में और 54 में महिमा।

1:12 परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया कि उनके वचन भविष्य में पूरे होंगे और यह कि वे भविष्य की पीढ़ियों की सेवा कर रहे थे। पुराना नियम मसीही विश्वासियों के निर्देश के लिये था (रोमि. 15:4; 1 कुरि. 10:11)। उन्हों ने वे सभी बातें कहीं जिसकी घोषणा सुसमाचार प्रचारक आज संसार में करते हैं - मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और उनका महिमा पाना। सुसमाचार के सभी प्रचारकों को "पवित्र आत्मा की सामर्थ से प्रचार करना है जो स्वर्ग से भेजा गया था" - यूहन्ना 14:16-17; लूका 24:49; प्रे. काम 1:4-5,8; 2:1-4.

हुए पवित्र आत्मा की मदद से तुम्हें खुशी की खबर सुनायी। इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की इच्छा रखते हैं।

13इस वजह से अपने मन को काम करने के लिए तैयार रखते हुए, सचेत होकर यीशु मसीह के लौटने के समय मिलने वाली कृपा की पूरी आशा रखो। 14आज्ञा मानने वाले बच्चों की तरह अपनी नासमझी के समय की पुरानी चाह मत रखो, 15लेकिन जैसे तुम्हारे बुलाने वाले पवित्र हैं वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनो। 16लिखा है कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।

17इसलिए कि तुम हे पिताजी कहकर उन से प्रार्थना करते हो जो बिना तरफ़दारी किए हर एक के काम को देखकर इन्साफ़ करते हैं, अपने परदेशी होने के समय को परमेश्वर के डर में बिताओ। 18क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो पूर्वजों से चला आ रहा है उससे तुम्हारी

"स्वर्गदूत"- उत्पत्ति 16:7 की टिप्पणी देखें। ऐसा लगता है कि विश्वासियों की मुक्ति के लिये मसीह और आत्मा के द्वारा परमेश्वर क्या कर रहा है, वे नहीं जानते हैं। परमेश्वर अभी उन्हें सिखा रहे हैं (इफ़ि. 3:10)।

1:13 इस मुक्ति के संदेश के विषय में अधिक जानने के लिये स्वर्गदूत तत्पर रहते हैं। हमें कितना अधिक उत्सुक होना चाहिए, क्योंकि हमें तो यह उद्धार दिया गया है। हमारे पास नया मन है (रोमि. 12:2; इफ़ि. 4:23-24) और उसे परमेश्वर के वचन से भर दें। मसीही जीवन इस बात पर बल देता है कि हम अपने विचार, मनन और अध्ययन के द्वारा, परमेश्वर ने जो कुछ हमारे लिये प्रगट किया है उसे समझने की कोशिश करें। तुलना करें भजन 1:2; 119:26-27,34,73 आदि। इफ़ि. 1:18; 3:18; फ़िलि. 1:9-10; कुल. 1:9.

"मन को काम करने के लिए"- लम्बे वस्त्र को कमर में बाँधना कार्य के लिये तैयारी दिखाता है।

"सचेत"- इसका अर्थ आत्म-संयम हो सकता है।

"यीशु मसीह के लौटने"- पद 7, मत्ती 24:30; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28.

"कृपा"- परमेश्वर ने विश्वासियों को पहले ही से अनुग्रह दिया है, परन्तु और कृपा आना बाकी है (पद 4; इफ़ि. 2:7)। कृपा और उसके प्रतिफल पर पूरी रीति से अपनी आशा लगाए रखने से हम इस योग्य बन जाते हैं कि हम अपने दुखों और परीक्षाओं को आनन्द के साथ सह सकें।

1:14 "आज्ञा...बच्चों"- यही परमेश्वर चाहता है - पद 2, रोमि. 6:17-18; 2 कुरि. 2:9; 2 थिस्स. 2:8.

"तरह"- रोमि. 12:2; 8:29.

"नासमझी"- यूहन्ना 15:21; प्रे.काम 3:17; 17:30; 1 कुरि. 15:34; इफ़ि. 4:18; 1 तीमु. 1:13.

"पुरानी चाह" या "बुरी इच्छाएँ"- मत्ती 15:19; रोमि. 1:24; 8:5; इफ़ि. 2:1-3; उत्पत्ति 8:21.

1:15-16 लैव्य. 20:7; यशा. 6:3; यूहन्ना 17-17-19; रोमि. 6:19,22; 2 कुरि. 7:1; इफ़ि. 4:24; इब्रा. 12:10,14;। यही विश्वासी का लक्ष्य होना चाहिये।

"सारे चालचलन"- हमें अपने जीवन को पवित्र और अपवित्र में नहीं बाँटना चाहिये। विश्वासियों के लिये सम्पूर्ण जीवन पवित्र है।

1:17 "पिताजी"- मत्ती 5:16 के नोट्स देखें।

"बिना तरफ़दारी"- रोमि. 12:11; इफ़ि. 6:9; कुल. 3:25.

"परदेशी होने के समय"- पद 1. यूनानी शब्द का अर्थ है, विदेशी के समान रहना, घर से बाहर रहना।

डर"- 2:17; उत्पत्ति 20:11; अय्यूब 28:28; भजन 34:11-14; 86:11; 90:7-11; 111:10; नीति. 1:7; प्रका. 14:7; 15:4; 19:5. सच्चे परमेश्वर के प्रति आदर, भक्ति का ऐसा भय जो उन्हें अप्रसन्न नहीं करना चाहता, न ही उनका अनादर - यह आत्मिक जीवन का केन्द्र है। उनके बिना हम सच्चा खरा जीवन नहीं बिता सकते। यह डर हमें बुराई से अलग करता है और भला करने एवं पिता की उपासना करने के लिये प्रेरित करता है। इसीलिए इसके विषय में बाईबल में आज्ञा दी गयी है (2:17; प्रका. 14:7)।

1:18 "निकम्मा चालचलन"- ऐसा जीवन मसीह के पास आने से पहले हम सभों के पास था और उन सभी के पास है जो मसीह से दूर हैं (भले ही

आज़ादी चाँदी, सोने या बर्बाद होने वाली चीजों से नहीं हुयी। 19लेकिन निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के खून से हुयी। 20उनका (परमेश्वर का) ज्ञान तो दुनिया को बनाए जाने से पहले ही से जाना गया था, लेकिन अब इस आखिरी ज़माने में तुम्हारे लिए सामने लाया गया। 21जो उनके द्वारा उस परमेश्वर पर भरोसा करते हो, जिन्होंने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया और इज़्ज़त दी, ताकि तुम्हारा भरोसा और उम्मीद परमेश्वर पर हो।

22सत्य की आज्ञा मानने से तुम ने अपनी आत्मा को पवित्र (शुद्ध) कर लिया है, ताकि आपस में एक दूसरे से सच्चा प्रेम कर सको। अपने पूरे मन से दूसरों से प्रेम रखो। 23क्योंकि तुम ने बर्बाद हो जाने वाले नहीं लेकिन बर्बाद न होने वाले बीज से परमेश्वर के ज़िन्दा और हमेशा ठहरने वाले शब्द से नया जन्म पाया है। 24क्योंकि हर एक इन्सान घास की तरह है और उसकी सारी खूबसूरती घास के फूल की तरह है। घास सूख जाती है और फूल झड़ जाता है,

25लेकिन प्रभु का वचन सदा काल तक रहेगा और यह वही खुशी का संदेश है जो तुम्हें सुनाया गया।

2 इसलिए हर तरह की दुश्मनी, चालाकी, कपट, डाह और बदनामी को दूर रखते

बाइबिल की समझ न रखने वाले ऐसा न सोचते हों)। तुलना करें सभो. 1:2; 2:11. दुनिया की बातों से भरे रहने का अर्थ है, खाली रहना। क्या हम में से कोई इस प्रकार का खालीपन अनुभव करता है? मसीह की ओर मुड़े। वह हमारे जीवन को अर्थ, उद्देश्य और आशा प्रदान करेंगे।

"आज़ादी"- भजन 78:35; मत्ती 20:28; के नोट्स देखें।

1:19 हमको छुड़ाने और अपना बनाने के लिये परमेश्वर ने दाम चुकाया (मत्ती 20:28; 26:28; प्रे.काम 20:28; रोमि. 3:18,25)। यह अनमोल है, शब्दों से उसे आँका नहीं जा सकता।

"निर्दोष और निष्कलंक"- 2:22; इब्रा. 4:15; 7:26; निर्ग. 12:5; लैव्य. 1:3. मसीह द्वारा खून बहाये बिना, किसी के लिये कोई मुक्ति नहीं है (इब्रा. 9:22)।

"मेम्ने"- यूहन्ना 1:29.

1:20 संसार के बनाए जाने से पहले, मनुष्य के पाप में गिरने से पहले मनुष्य के उद्धार के लिये परमेश्वर के पास योजना थी और मसीह उस योजना का केन्द्र थे। तुलना करें इफ़ि. 1:4; प्रे.काम 2:23.

1:21 "उनके द्वारा"- पतरस कहता है कि केवल मसीह के द्वारा, मनुष्य जीवित परमेश्वर पर विश्वास लाता है। मसीह के बिना लोग भले ही यह सोचते हों कि वे उसमें विश्वास करते हैं, परन्तु वास्तव में नहीं करते।

"उस...इज़्ज़त दी"- प्रे.काम 2:32-33; 3:13; यूहन्ना 17:1. केवल इसीलिए कि परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, इसीलिए हमारे लिये यह संभव है कि हम जीवित परमेश्वर में विश्वास और आशा रखें - पद 3.

1:22 हम केवल एक ही तरीके से पवित्र और शुद्ध रह सकते हैं - बाईबल में प्रगट की गई परमेश्वर की सच्चाई के द्वारा। तुलना करें रोमि. 6:17-19; यूहन्ना 8:31-32. शुद्धिकरण का प्रतिफल है सच्चा प्रेम। यदि हमारे मन में स्वर्गिक परमेश्वर के लोगों के लिये प्रेम नहीं है, तो इसका अर्थ है कि कोई वास्तविक पवित्रता भी नहीं है, उद्धार भी नहीं है (1 यूहन्ना 3:14; यूहन्ना 13:34)। विश्वासियों के पास एक दूसरे के लिये कैसा प्रेम होना चाहिए यहाँ देखें - सच्चा, तीव्र और शुद्ध।

1:23 "नया जन्म"- पद 3; यूहन्ना 1:13. परमेश्वर का वचन अविनाशी बीज है। नया जन्म परमेश्वर के वचन के द्वारा आता है जो मन में बोया जाता है (याकूब 1:18)।

1:24-25 यशा. 40:6-8 । परमेश्वर के बिना मनुष्य जो कुछ करता है और जो कुछ कर सकता है, वह स्थायी नहीं होता। परमेश्वर का वचन (और उस वचन के द्वारा जिन्होंने नया जीवन पाया है वे) सदा बने रहेंगे - मत्ती 24:35; 1 यूहन्ना 2:17.

2:1 इफ़ि. 4:25,29,31; कुल. 3:5-10 में सभी बातें पुराने स्वभाव की हैं और विश्वासी के जीवन में इन को स्थान नहीं मिलना चाहिये (गल. 5:19-21)।

हुए, 2नए जन्मे हुए बच्चों की तरह निर्मल आत्मिक दूध की चाह रखो ताकि उससे मुक्ति (उद्धार) में बढ़ते जाओ। 3क्योंकि तुम ने सचमुच यीशु की कृपा का स्वाद चख लिया है।

4उनके पास आकर जिन्हें लोगों ने फ़ालतू समझा, लेकिन परमेश्वर की निगाह में चुने हुए और कीमती जीवित पत्थर हैं 5तुम भी खुद जीवित पत्थरों की तरह आत्मिक घर बनते जाते हो जिससे पुरोहितों का पवित्र झुंड बनकर ऐसी आत्मिक भेंटें लाओ जो यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर को कबूल हो सकें। 6इसीलिए बाइबल में भी लिखा हैः देखो, मैं सिय्योन में नींव का चुना हुआ और कीमती पत्थर धरता हूँ और जो कोई उस पर विश्वास लाएगा, वह किसी तरह से शर्मिन्दा नहीं होगा।

7इसलिए तुम विश्वास करने वालों के

2:2 "नये जन्मे हुए बच्चों"- शायद वह नये विश्वासियों के विषय में सोच रहा था। या वह पुराने विश्वासियों को डाँट रहा था कि वे अपने मसीही जीवन में मंद गति से उन्नति कर रहे हैं (तुलना करें 1 कुरि. 3:1-2; इब्रा. 5:11-14)। या वह यह कहना चाहता था कि मसीह के दोबारा आने के बाद हम जो कुछ होंगे, उसकी तुलना में हम आज आत्मिक बालक हैं (तुलना करें मत्ती 18:3)।

शिशुकाल के तीन गुणों को हमें हमेशा बनाए रखना हैः

आत्मिक पोषण की इच्छा
अबोधता और सादगी
परमेश्वर पर निर्भरता।

यदि आत्मिक बातों के लिये कोई भूख नहीं है, पिता की बातों के लिये भूख नहीं है तो क्या यह आत्मिक जीवन न होने का चिन्ह नहीं?

"निर्मल...दूध"- शुद्ध, बिना किसी मिलावट का। जिस दूध की हमें आवश्यकता है वह है परमेश्वर के वचन की शिक्षा। नये और पुराने दोनों विश्वासियों को इसकी लालसा करनी चाहिए (भजन 119:40,131)।

"बढ़ते जाओ"- इफ़ि. 4:13-15.

2:3 भजन 34:8 ।

2:4 "फ़ालतू समझा"- मत्ती 21:42; मरकुस 8:31; 9:12; लूका 17:25; यूहन्ना 1:11; प्रे.काम 4:11.

"कीमती"- मत्ती 3:17. देखें कि परमेश्वर के विचार मनुष्यों के विचारों से कैसे भिन्न हैं। मनुष्य ने यह नहीं सोचा कि जिस भवन को वे बना रहे हैं उसके लिये मसीह योग्य हैं।

"जीवित पत्थर"- यीशु मसीह। विश्वासी बेजान मूर्तियों के पास नहीं, परन्तु जीवित व्यक्ति के पास आते हैं।

"जीवित पत्थर"- मसीह के पास आने पर मसीही विश्वासी स्वयं जीवित पत्थर बन जाते हैं। जीवित पत्थर 'एक जीवनदायक आत्मा' (1 कुरि. 15:45) है।

2:5 "घर"- इफ़ि. 2:19-22; इब्रा. 3:6; 1 कुरि. 3:9 - परमेश्वर शिल्पकार और बनाने वाले हैं। हमें इस बात से आश्वस्त होना है कि उन्हों ने अपने घर की अच्छी योजना बनायी है। वह हर एक पत्थर को जानते हैं और जानते हैं कि उसे कहाँ रखना है। उसे कुछ पत्थर हटाकर दूसरों को वहाँ नहीं रखना होगा। परमेश्वर एक हाथ से तोड़कर दूसरे हाथ से नहीं बना रहा है। इफ़ि. 2:21 की टिप्पणी देखें।

"पुरोहितों का पवित्र झुण्ड"- विश्वासी मात्र परमेश्वर के 'घर' के रूप में बनाए ही नहीं जाते हैं, वे उसके घर में मध्यस्थ या पुरोहित के रूप में सेवा करते हैं - पद 9, प्रका. 1:6; इब्रा. 10:19-22. नए नियम में विश्वासियों के बीच से कुछ विशेष लोगों को लेकर उन्हें पुरोहित नहीं बनाया गया है। सभी विश्वासियों को याजक कहा गया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि नये नियम में मसीह के किसी विशेष शिष्य या प्रेरित को पुरोहित नहीं कहा गया है। जिन लोगों को मसीह ने कलीसिया के अगुवे होने के लिये दे दिया, उन्हें पुरोहित पद नहीं दिया गया (इफ़ि. 4:11; 1 कुरि. 12:28)। इसे ध्यान में रखा जाए।

"आत्मिक भेंटें"- रोमि. 12:1; इब्रा. 13:15-16; याजक या पुरोहितों के पास चढ़ाने के लिये कुछ होना चाहिये। पुरोहित होने के नाते विश्वासियों के पास चढ़ाने योग्य बलिदान वे स्वयं हैं, उनकी स्तुति, उनका प्रेम और दया के काम हैं।

2:6 पद 4, यशा. 28:16; जकर्याह 1:4; इफ़ि. 2:20.

लिए वह कीमती हैं, लेकिन जो लोग आज्ञा नहीं मानते, उनके लिए जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने बेकार साबित किया वह नींव का पत्थर हो गया है। 8ऐसे लोग सच्चाई को कबूल न करने की वजह से केवल ठोकर खाते ही नहीं, लेकिन ठोकर खाने के लिए ठहराए भी गए थे।

9लेकिन तुम एक चुना हुआ वंश, शाही पुरोहित, पवित्र राष्ट्र और परमेश्वर के लोग हो, इसलिए जिसने तुम्हें अँधेरे में से अपनी अनोखी रोशनी में लेवता दिया है, उनकी अच्छाइयाँ दिखलाओ। 10पहले तुम उनके लोग नहीं थे लेकिन अब परमेश्वर की प्रजा हो, तुम पर दया नहीं हुयी थी, लेकिन अब हुयी है।

11हे प्रियो मैं तुम से निवेदन करता हूँ कि तुम अपने आपको परदेशी और मुसाफिर समझकर उन दुनियावी अभिलाषाओं से

2:7 "कीमती"- 1:8. जो लोग उन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिये मसीह कीमती है। केवल वे ही उनके मूल्य को समझते हैं। वे ही वास्तव में उस से प्रेम रखते हैं।

"नींव का पत्थर"- भजन 118:22; मत्ती 21:42; प्रे.काम 4:11.

2:8 यशा. 8:14; रोमि. 9:33 जो लोग परमेश्वर के सत्य की आज्ञा नहीं मानना चाहते हैं वे सत्य के विषय में धोखा खाते हैं और यह सत्य मसीह (लूका 2:34) हैं। जो उसे चाहते हैं वे असफल नहीं होते हैं।

"ठहराए भी गए"- शायद पतरस यहूदी राष्ट्र द्वारा मसीह के ठुकराए जाने की ओर संकेत कर रहा है। प्रभु यीशु और प्रेरित पौलुस भजन संहिता और यशायाह से उदाहरणों को लेकर सिखाना चाहते हैं। इस विषय पर रोमि. 9-11 और नोट्स देखें, विशेषकर रोमि. 9:14-24,30-33; 11:7-12,22-32.

2:9 "चुना हुआ"- इफ़ि. 1:4,11; यूहन्ना 15:16.

"शाही पुरोहित"- पद 5, इन शब्दों से ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसा याजकपन जो राजा का है और उसकी सेवा में है, ऐसा याजकों का समाज जो एक राज्य को बनाता है (प्रका. 5:10) या ऐसा पुरोहितपन जहाँ सभी पुरोहित राजकुमार हैं या तीनों ही हैं।

"पवित्र राष्ट्र"- ऐसा राष्ट्र जो पृथ्वी के अन्य सभी लोगों से अलग किया गया है और परमेश्वर के प्रति समर्पित है। तुलना करें निर्ग. 19:5-6; यूहन्ना 17:6. पतरस कलीसिया को 'नया इस्त्राएल' या 'आत्मिक इस्त्राएल' नहीं कहता। वह यहूदी विश्वासियों को लिख रहा है। इस्त्राएल राष्ट्र को नहीं, जिन्होंने मसीह का तिरस्कार किया। वे तो इस्त्राएल के सच्चे यहूदी मसीही हैं। पतरस यह नहीं कह रहा है कि परमेश्वर को पुराने इस्त्राएल से कुछ लेना देना नहीं (प्रे.काम 1:6-7 से तुलना करें)। नए नियम का कोई भी लेखक कलीसिया को नया इस्त्राएल नहीं कहता और क्योंकि ऐसा उन्हों ने ऐसा नहीं किया है, इसलिए हमें भी नहीं करना है। दूसरे धर्मों में से आए हुए विश्वासी इस्त्राएल वंश में कलम किये गये हैं। देखें रोमि. 11; इफ़ि. 2:11-19.

"परमेश्वर के लोग"- यहाँ यूनानी शब्द के कई एक अर्थ हैं - 'सुरक्षित रखना', 'प्राप्त करना'।

"अनोखी रोशनी"- प्रे.काम 26:18; 2 कुरि. 4:6; इफ़ि. 5:8; कुल. 1:13; 1 यूहन्ना 1:5,7.

"अच्छाइयाँ"- इस यूनानी शब्द का अर्थ - भलाई, उत्तमता, आदि बातें जो प्रशंसनीय है। फ़िलि. 4:8 और 2 पतर. 1:3,5 देखें, यहाँ यूनानी में वही शब्द है। चाहे यहूदी, मसीह या अन्य जाति के लोग हों, सभी का कर्तव्य और विशेष अधिकार है कि वे एक सच्चे परमेश्वर की अच्छाई और महिमा को जगत के समान प्रस्तुत करें। हमें अपनी नहीं, उनकी महिमा का ध्यान रखना है। हमें अपनी नहीं उनकी भलाई का वर्णन करना है (तुलना करें, भजन 40:10; 71:16; यशा. 42:12; 43:7; इफ़ि. 1:6,12,14)।

2:10 मसीह पर विश्वास के पहले यहूदी और गैरयहूदी में लोगों का विभाजन था और वे परमेश्वर के आत्मिक लोग नहीं थे - होशे 1:9-10; 2:23; रोमि. 9:24-26; इफ़ि. 2:11-12. लोगों को अंधकार से ज्योति में लाने में परमेश्वर दया के आधार पर कार्य करते हैं (तीतुस 3:5)।

2:11 "परदेशी और मुसाफिर"- 1:17, वे लोग जो अपने वास्तविक घर, स्वर्ग से दूर रहते हैं।

"दुनियावी अभिलाषाओं"- 1:14, ये सब इस संसार और पापमय स्वभाव की हैं। विश्वासी स्वर्ग के हैं।

जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। 12दूसरे लोगों के बीच तुम्हारा चालचलन अच्छा हो, इसलिए कि जिन बातों में वे तुम्हें बुरा समझकर बदनाम करते हैं, तुम्हारे भले कामों की वजह से कृपादृष्टि के दिन परमेश्वर की बड़ाई करें।

13यीशु की खातिर नागरिकों के लिए बनाए गए हर इन्तज़ाम (कानून) के आधीन रहो। राजा के आधीन इसलिए कि वह सब के ऊपर शासन करता है। 14अधिकारियों के आधीन इसलिए क्योंकि वे गलत करने वालों को सज़ा देने और सही करने वालों को सम्मानित करने के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराए गए हैं। 15परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले काम करने से बेअकल लोगों की अज्ञानता की हरकतों को बन्द कर दो। 16अपने आपको आज़ाद जानो, लेकिन अपनी इस आज़ादी को बुराई के लिए, आड़ न बनाओ और अपने आपको परमेश्वर के सेवक, समझकर रहो। 17सब की इज़्ज़त करो, भाई बहनों से प्यार रखो, परमेश्वर से डरो और राजा को सम्मान दो।

"युद्ध"- बुरी बातों की चाह, शैतान, विश्वासियों के विरोध में युद्ध के लिये एक हथियार के रूप में उपयोग करता है (इफ़ि. 6:11-12), बुरी इच्छाएँ तलवार के समान हैं जो हमारे आत्मिक जीवन को घायल करती हैं। वे दिमाग में ऐसे आग के तीरों के समान हैं जो हमारे विचारों को परमेश्वर और पवित्रता से हटाती हैं। बन्दूक की गोली जिस तरह शरीर के लिये घातक है, उसी तरह बुरी इच्छाएँ प्राण को चोट पहुँचाती हैं और दर्द और यातना को जन्म देती हैं। हमें उन्हें अपने हृदय में जगह नहीं देनी चाहिए।

"बचे रहो"- हम परमेश्वर की मदद से ऐसा कर सकते हैं। हर एक बुरी लालसा से बचे रहना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। यदि हम इन बुरी लालसाओं को हमारे हृदय में बस जाने की अनुमति देंगे, तो वे हम पर प्रबल होंगी, और उन्हें दूर करने के बजाय उन्हें हमारे मन में बसाए रखना हमें आसान जान पड़ेगा। बुरी लालसाओं से बचा रहना बुद्धिमानी का मार्ग है, जिसे परमेश्वर सिखाते हैं। इस में विश्वासी के चुनाव और इच्छा का योगदान है - हमें उन्हें अपने दिमाग में स्थान न देने का चुनाव करना चाहिये।

2:12 देखें मत्ती 5:16.

"अच्छा"- यूनानी शब्द का अर्थ है 'सर्वोत्तम' और 'प्रशंसनीय', 'योग्य', 'आकर्षक', 'अच्छा'।

"बदनाम करते हैं"- मसीह का तिरस्कार करने वाले, विश्वासियों को बदनाम करना चाहते हैं, उनकी गलती ढूँढते हैं। जब दूसरे हमारी निन्दा करते हैं, तब हमें भले काम करने हेतु उत्साहित होना चाहिए। यह बुराई हमारे लिये भलाई का काम करेगी।

"कृपादृष्टि के दिन"- यह उस विशेष समय की ओर संकेत कर सकता है जो परमेश्वर की ओर से आशीष या न्याय का होगा।

2:13-14 रोमि. 13:1-5.

2:15 "भले काम करने"- मसीह के सुसमाचार के पक्ष को रखने का सब से अच्छा उपाय है विश्वास करने वालों का परिवर्तित और पवित्र जीवन।

"बेअकल लोगों"- रोमि. 1:21-22.

"अज्ञानता"- 1:14; 2 पतर. 3:16 वे मसीह, सुसमाचार और उसके लोगों के विरोध में बोलते हैं, क्योंकि वे सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते (यूहन्ना 15:21; इफ़ि. 4:17-18)।

2:16 गल. 5:13; रोमि. 6:15-18.

2:17 "सब की"- धनवान और गरीब, ऊँच या नीच, पढ़ा-लिखा या अज्ञान। सब प्रकार के घमण्ड और श्रेष्ठता की भावना को त्यागना होगा। विश्वासी दूसरों को तुच्छ न समझने पाए। तुलना करें रोमि. 12:10; याकूब 2:1-4,9; 1 कुरि. 12:14-26; प्रे.काम 6:1.

"परमेश्वर से डरो"- देखें 1:17 से सम्बंधित नोट्स। जैसे स्वर्गिक पिता से प्रेम करने की आज्ञा है, उसी प्रकार से उस से डरने की। सच पूछें तो सम्मान सहित भय और आशा स्वर्गिक पिता के प्रति प्रेम के साथ-साथ चलते हैं और इन्हें अलग नहीं किया जा सकता है। यह आज्ञा मसीही विश्वासियों को दी गई है, इसलिए ये गुण हम में होने चाहिए। और यदि हम में इसका अभाव पाया जाता है, तो हमें दाऊद के समान प्रार्थना करनी चाहिए - भजन 86:11.

"राजा को सम्मान दो"- तुलना करें रोमि. 13:1-7.

18हे सेवको, पूरे आदर के साथ अपने
स्वामियों के आधीन रहो, न सिर्फ़ भले
और नम्र लोगों के, लेकिन निर्दयी लोगों
के भी। 19अगर कोई परमेश्वर का ध्यान
रखते हुए बेइन्साफ़ी की वजह से दुख
उठाता है, तो यह बड़ी प्रशंसा की बात
है। 20क्योंकि अगर तुम ने अपराध करके
घूसे खाए और धीरज धरा तो इस में कौन
सी बड़ी बात? लेकिन यदि भला काम
करके दुख उठाते हो और धीरज धरते
हो, तो इस से परमेश्वर को खुशी होती
है। 21तुम ऐसे जीवन के लिए ही बुलाए
भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए
दुख उठाकर तुम्हारे सामने एक नमूना छोड़
गए हैं कि तुम उनकी तरह बनो। 22यीशु ने
न कोई गुनाह किया और न ही उनके मुँह
से छल की कोई बात निकली। 23उन्हों
ने गाली सुनकर गाली नहीं दी और दुख
उठाकर किसी को भी धमकी नहीं दी।
उन्हों ने बिना तरफ़दारी के इन्साफ़ करने
वाले परमेश्वर के हाथों में सब कुछ सुपुर्द
कर दिया। 24वह खुद ही हमारे गुनाहों
को अपनी देह पर लिए क्रूस पर चढ़ गए,
जिससे हम उन गुनाहों से किनारा कर के
अच्छे कामों के लिए जीएँ। उन के घायल
किए जाने की वजह से परमेश्वर के साथ
तुम्हारा रिश्ता सुधर चुका है (या माफ़ी
मिल चुकी है)। 25पहले तुम भटकी हुई
भेड़ों की तरह थे, लेकिन अब अपने प्राणों
के चरवाहे और देख-रेख करने वाले के
पास वापस आ चुके हो।

3 हे पत्नियो, इसी तरह तुम भी अपने
पति के अधिकार को स्वीकार करो,
उन के भी जो परमेश्वर को मानने के लिए
तैयार नहीं हैं। 2तुम्हारे बिना कुछ कहे सिर्फ़

2:18 "सेवको"- इफ़ि. 6:5-8; कुल. 3:22-24.
2:19 "प्रशंसा की बात"- स्वयं परमेश्वर ऐसे लोगों की सराहना करेगा और उन्हें प्रतिफल देगा।
2:20 तुलना करें 4:15-16.

"धीरज धरा"- क्रोधित नहीं होते, और न ही बदला लेते हैं।

2:21 "बुलाए भी गए हो"- जब स्वर्गिक पिता हमें अपने विशेष लोग होने के लिये बुलाते हैं, भले कार्य के लिये दुख उठाना भी उसी बुलाहट का अंग है। मसीह यीशु ने भले काम करने पर दुख उठाया। वह हमारे लिये उदाहरण हैं। उन्हों ने केवल भलाई ही के काम किये, परन्तु हम से अधिक दुख उठाया।

"उनकी तरह बनो"- मत्ती 4:19; 8:22; 16:24; 19:21; लूका 9:23; यूहन्ना 1:43; 10:4,27; 12:26; रोमि. 15:5; 1 कुरि. 11:1. जो लोग सोचते हैं कि वे मसीह में विश्वास करते हैं, परन्तु उसके पीछे नहीं चलते, वे स्वयं को धोखा दे रहे हैं।

2:22 यशा. 53:9; मत्ती 27:23; यूहन्ना 8:46; 19:4; 2 कुरि. 5:21; इब्रा. 4:15; 7:26.
2:23 यशा. 53:7; मत्ती 26:63; 27:12-24; लूका 23:8-9 । हमें भी इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये। ईमानदारी से न्याय करने वाले परमेश्वर हैं।
2:24 यहाँ बाइबिल में स्पष्ट शब्दों में बताया गया है कि मसीह ने हमारे बदले में दुख उठाया। देखें 3:18; यशा. 53:5; मत्ती 20:28; यूहन्ना 1:29; 10:11,14; रोमि. 3:25; 2 कुरि. 5:14,21; इब्रा. 9:28. यहाँ मसीह के दुख और मृत्यु का अभिप्राय देखें तुलना करें रोमि. 14:9; 2 कुरि. 5:15.

"गुनाहों के लिए मर कर"- रोमि. 6:10-14; गल. 2:20; 5:24; कुल. 3:5.

"अच्छे कामों के लिए"- रोमि. 6:18-19; 14:19,21; 2 कुरि. 5:21; इफ़ि. 4:24; फ़िलि. 1:11; 1 तीमु. 6:11.

"सुधर चुका"- यशा. 53:5; पाप हमारे थे लेकिन उन्होंने हमारी मुक्ति के लिये दण्ड अपने ऊपर ले लिया।

2:25 "भटकी हुई"- यशा. 53:6.

"चरवाहे"- 5:4; यूहन्ना 10:1-18.

"देख-रेख करने वाले"- यही शब्द प्रे.काम 20:28 में कलीसियाओं के अगुवों के लिये उपयोग हुआ है, फ़िलि. 1:1; तीतुस 1:7, जैसे मसीह मुख्य चरवाहा हैं, वह मुख्य देखरेख करने वाले भी हैं।

3:1-2 "अधिकार को स्वीकार"- इफ़ि. 5:22-24.

तुम्हारे चालचलन ही से वे यीशु को मानने
वाले हो जाएँगे। 3बाहरी खूबसूरती के बारे
में ज़्यादा मत सोचो जो तरह-तरह के बालों
की स्टाइल महँगे जेवरात और सुन्दर कपड़ों
से आती है। 4शान्त स्वभाव की एक भीतरी
खूबसूरती है जो परमेश्वर की निगाह में
बहुत कीमती है, वही तुम्हारी पहचान होनी
चाहिए। 5पुराने समयों में परमेश्वर से प्यार
करने वाली महिलाएँ इसी तरह से अपने
आपको संवारती थीं। वे परमेश्वर पर
भरोसा रखती और पति की आधीनता में
रहा करती थीं। 6उदाहरण के लिए साराह,
अब्राहम को 'मेरे मालिक' कहकर बुलाया
करती थी। अगर तुम उसी की तरह वही
करो जो ठीक है और किसी बात से भयभीत
न हो तो उसी की बेटियाँ ठहरोगी।

7इसी तरह से तुम पतियो, अपनी पत्नियों
की इज़्ज़त करो। उसके साथ समझदारी
के साथ पेश आओ। वह कमज़ोर हो
सकती है, लेकिन तुम दोनों परमेश्वर के
नए जीवन के वरदान में बराबरी के साथी
हो। ऐसा करने से तुम्हारी प्रार्थनाओं के
उत्तर में रूकावट नहीं आएगी।

8निचोड़ की बात यह है कि तुम सभी
को एक मन, सहानुभूति और प्यार से
भरा, दयालु और नम्र होना चाहिए। 9बुराई
के बदले बुराई और बेइज़्ज़ती के बदले
बेइज़्ज़ती न करो, लेकिन आशीर्वाद दो
क्योंकि ऐसी ही तुम्हारी बुलाहट है और
तभी तुम आशीष पाओगे। 10क्योंकि जो
अपनी भलाई की सोचता है और अच्छे
दिन देखना चाहता है, उसे चाहिए कि वह

3:2 "चालचलन"- जब सभी दूसरे उपाय असफल हो जाएँ, इस तरीके से अविश्वासी मसीह के पास लाए जा सकते हैं। पत्नी का प्रचार करना पति को मसीह के पास लाने के बजाय उस से दूर ले जाएगा।

"मानने वाले"- मसीह के लिये जीते जाएं। तुलना करें 1 कुरि. 7:16.

3:3-4 यशा. 3:16-23; 1 तीमु. 2:9-10 । अपने बालों के बनाने के अनेक तरीकों, गहनों के पहनने, सुंदर वस्त्रों के पहनने से नहीं, किंतु भीतरी सुंदरता से स्त्रियाँ अपने पतियों को मसीह में ला सकती हैं। जैसे, नीति. 31:10-31 से तुलना करें। कलीसियाओं और संसार की स्थिति कुछ और ही हुई होती, यदि स्त्रियाँ भीतरी सुंदरता के विषय में ध्यान देतीं।

3:5-6 पवित्रता, परमेश्वर से आशा और आधीनता की आत्मा ऐसे चिन्ह हैं, जिन्हें स्वर्गिक पिता परमेश्वर विश्वासी स्त्री में देखना चाहते हैं।

3:6 "साराह"- उत्पत्ति 18:12.

"बेटियाँ"- अब्राहम सभी विश्वासियों का पिता है (रोमि. 4:16)। सारा उन विश्वास करने वाली स्त्रियों की माँ है जो अपने पतियों के प्रति आधीन हैं।

3:7 इफ़ि. 5:25,28; कुल. 3:19 । वह मसीही पतियों से कह रहा है।

"समझदारी"- पति को पत्नी की समस्याओं, इच्छाओं और निर्बलताओं को समझना चाहिये और इन सब के बावजूद उन्हें आदर देना चाहिये।

"कमज़ोर"- शारीरिक रीति से स्त्रियाँ दुर्बल हैं, मानसिक रीति से नहीं, हालांकि उनका सोचने का तरीका और भावनात्मक बनावट भिन्न है। उनकी स्थिति (पद) भी निर्बल है, उन्हें आज्ञा माननी है, आधीन होना है।

"प्रार्थनाओं...रूकावट"- यदि विवाहित पुरुष स्त्री चाहते हैं कि उनकी प्रार्थना का उत्तर मिले, तो एक दूसरे के प्रति व्यवहार के सम्बंध में उन्हें सतर्क रहना चाहिये। परमेश्वर एक ऐसे पति की प्रार्थनाओं का उत्तर देने से इंकार कर सकते हैं, जो अपनी पत्नी से बुरा व्यवहार करता है या पत्नी की प्रार्थनाओं को भी, यदि वह अपने पति के प्रति आधीन नहीं होती।

3:8-9 रोमि. 12:9-17; इफ़ि. 4:2-3,32; फ़िलि. 2:2-3; कुल. 3:12-14; लूका 6:28; यूहन्ना 13:34; 1 थिस्स. 5:15.

3:9 "आशीर्वाद दो"- 1:3,5; गल. 3:14; इफ़ि. 1:3. अभी की अपनी आशीषों और जो आशीष भविष्य में हमारे लिये हैं, उनको ध्यान में रखते हुए हमें दूसरों से बदला लेने के बदले आशीष देने के लिये तत्पर रहना चाहिये।

3:10-12 भजन 34:12-16 । पद 8,9 के अनुसार, यदि हम परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार नहीं जीवन यापन करेंगे, तो अच्छे दिन के बजाए बुरे दिन दिखेंगे और प्रार्थना सुनने के बजाए प्रभु अपने कान हम से फेर लेंगे।

अपनी जीभ को बुराई और होठों को झूठ से बचाए। 11उसे दुष्टता से मुड़कर भला करना चाहिए। उसे दूसरों के साथ मेल से रहना चाहिए। 12इसलिए कि यीशु मसीह की आँखें माफ़ किए हुए लोगों और उनके कान उनकी दुआओं की तरफ़ लगे रहते हैं। बुरा करने वाले लोगों से वह अपना मुँह मोड़ लेते हैं।

13अगर तुम सही और भला करने का मन बना चुके हो तो कौन तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकता है। 14लेकिन सच तो यह है कि अगर तुम जायज़ काम करने पर तकलीफ़ उठाते हो तो तुम्हें इसका फल मिलेगा। इसलिए न ही घबराओ और न चिन्तित हो। 15बजाए इसके यीशु को अपने जीवन का मालिक समझकर उपासना करो। अगर कोई तुम से तुम्हारी उम्मीद के बारे में पूछे तो उसे समझाने के लिए हमेशा तैयार रहो। 16लेकिन यह भी इज़्ज़त, दीनता और शुद्ध विवेक के साथ करना, ताकि जो लोग तुम्हारे मसीही चालचलन की खिलाफ़त करते हैं, तुम पर आरोप लगाते समय शर्मिन्दगी महसूस करें। 17यदि परमेश्वर को यह मन्ज़ूर है तो हम सही काम करें और तकलीफ़ उठाएँ बजाए इसके कि गलत करने की सज़ा पाएँ। 18क्योंकि बेगुनाह यीशु मसीह ने भी गुनाहों के लिए एक बार दुख उठाया। ताकि परमेश्वर के खिलाफ़ बलवा करने वालों के साथ परमेश्वर का मेल हो सके। उन्हों ने देह में तो मौत सह ली, परन्तु पवित्र आत्मा से जिलाए गए। 19तभी उन्हों ने जाकर

3:13 अविश्वासी भी, श्राप के बजाय आशीष के, दया और करूणा के व्यवहार, बुराई के बदले अच्छे व्यवहार को पहचानते हैं और प्रशंसा करते हैं।

3:14 हमारे इस संसार में भलाई करने पर दुख उठाना सदा एक सम्भावना है - 2:19-20; 4:12-13. यदि ऐसा होता है तो हमें यीशु की कही सत्य बात को स्मरण रखना चाहिये।

"न ही घबराओ"- यशा. 8:12 तुलना करें मत्ती 10:26,28,31; यूहन्ना 14:27.

3:15 "जीवन... करो"- उसका अर्थ है प्रभु को हर किसी और व्यक्ति से अलग रखना है, ताकि सिर्फ़ उन्हीं की उपासना की जाए और आज्ञा मानी जाए। जान बूझकर अपनी इच्छा से निरन्तर यीशु को अपने मन में प्रभु बनाकर रखें।

"हमेशा तैयार रहो"- इफ़ि. 5:15-16. हमें यह जानना चाहिये कि हम मसीह में विश्वासी क्यों हैं और स्वर्ग में आशा क्यों है। यह सत्य हमें दूसरों को स्पष्ट और प्रभावकारी रीति से बताना चाहिये।

3:16 "विवेक"- प्रे.काम 23:1; 24:16; 2 कुरि. 1:12; 1 तीमु. 1:5,19; 3:9.

"शर्मिन्दगी"- 2:15.

3:17 2:20; 4:15-16 देखें.

3:18 2:24 देखें.

"बेगुनाह यीशु"- लूका 23:47; प्रे.काम 3:14; 7:52; 22:14; 1 यूहन्ना 2:1.

"एक बार"- यूहन्ना 19:30; इब्रा. 9:25-28; 10:10.

"दुख उठाया"- 2:21; 4:1.

"परमेश्वर...वालों"- हम सभी स्वभाव से ऐसे हैं (रोमि. 1:29-32; 3:9-20,23)। पापियों के लिये मसीह के दुखों के उद्देश्य को देखें - हमें पिता तक पहुँचाने के लिये। तुलना करें इफ़ि. 2:13,18; इब्रा. 10:19-22; यूहन्ना 14:6.

"मौत सह ली"- मत्ती 16:21; 27:50,58-60; मरकुस 15:43-45; यूहन्ना 19:32-34; 1 कुरि. 15:3.

"आत्मा"- याहवे पिता का आत्मा (यूहन्ना 14:16-17; मत्ती 3:16)।

"जी उठे"- मत्ती 28:6; रोमि. 1:4.

3:19-22 यह भाग कठिन है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी मृत्यु और स्वर्ग पर उठाए जाने के बीच मसीह ने कहीं जाकर बंदीगृह में बंद कुछ आत्माओं से कुछ कहा। पतरस यह नहीं बताता कि 'आत्माओं' या 'बंदीगृह' और मसीह के वहाँ जाने से उसका क्या अर्थ है। कुछ लोग सोचते हैं कि पतरस का अर्थ है, मसीह के आत्मा का नूह में होना जब वह अपने समय के लोगों को संदेश दिया करता था। किंतु ऐसा अर्थ लगाने का अर्थ है पद 19 के शब्दों को अनदेखा करना।

3:19 मृत्यु के पश्चात् मसीह कहाँ गये? "प्रेरितों का विश्वास" नामक विश्वास के अंगीकार में ये शब्द मिलते हैं: "वह नरक में उतर गये"। मसीह निश्चित रीति से दण्ड सहने नरक में नहीं उतरे। उनकी सारी पीड़ा क्रूस पर समाप्त हो गयी थी (यूहन्ना 19:30)। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि वह मृतक लोगों के क्षेत्र जिसे इब्रानी में 'शिओल' कहते हैं, गए (इफ़ि. 4:9; भजन 16:10)।

न्यायिक हिरासत में बंद आत्माओं को
खुशी की खबर सुनायी। 20नूह के जहाज़
बनाए जाने के समय परमेश्वर इन्हीं
अनाज्ञाकारियों का इन्तज़ार करते रहे थे,
कि वे अपना मन बदलें। लेकिन ऐसा नहीं
हुआ और जल प्रलय के बाद केवल आठ
ही लोग बच पाए 21यह बप्तिस्मे की तरफ़
इशारा है जो खुद मुक्ति पाने को दिखाता
है - यह देह की गंदगी साफ़ नहीं करता है
लेकिन यह परमेश्वर के आगे शुद्ध विवेक

"न्यायिक हिरासत"- बाईबल यह नहीं कहती है कि मनुष्यों से निकली हुई आत्माएँ बंदीगृह में हैं, किंतु कुछ स्वर्गदूत हैं (2 पतर. 2:4)। इसलिए आत्माओं का यहाँ संभवतः अर्थ पापी स्वर्गदूतों से है।

"आत्माओं"- पतरस मनुष्यों की आत्माओं की ओर संकेत नहीं करता है, इसलिए यह आवश्यक नहीं कि यह सोचा जाए कि वे वही लोग थे जो जलप्रलय में मर गये थे। बाईबल में आत्माएँ कभी-कभी दुष्टामाओं या स्वर्गदूतों की ओर संकेत करती हैं (मत्ती 8:16; इब्रा. 1:14)।

"खुशी की खबर सुनायी"- पतरस यूनानी शब्द का उपयोग नहीं करता जिसका अर्थ है सुसमाचार प्रचार करना, किंतु एक शब्द जिसका अर्थ है सुसमाचार की घोषणा करना।

3:20 "मन बदलें"- जल प्रलय से पहले यह बात स्वर्गदूतों और मनुष्यों के बारे में सत्य थी (यहूदा 6-7; 2 पतर. 2:4; उत्पत्ति 6:2-7)।

"आठ"- नूह, उसकी पत्नी, उसके तीन बेटे, और उनकी पत्नियाँ (उत्पत्ति 6:10; 7:1)।

"बच पाए"- अगले पद के प्रथम वाक्य से तुलना करें। जिस प्रकार से जल प्रलय में से होकर वे बच गए, इसी प्रकार पानी का बपतिस्मा विश्वास के बचाए जाने को दिखाता है। जल में से गुज़रने से वे नहीं बचे, जल पोत में आने से वे बच गए। जल प्रलय के जल में से होकर जाने वाले जल पोत (जहाज) के द्वारा वे नाश और मृत्यु से बचे।

3:21 "बपतिस्में"- मत्ती 3:6,13-16; 28:19; मरकुस 16:16; प्रे.काम 2:38. जल प्रलय का जल पानी के बपतिस्मे की ओर संकेत करता है। यूनानी शब्द "एक दम अनुरूप" - जिसका उपयोग यहाँ किया गया है, इब्रा. 9:24 में बहुवचन में है। जिस प्रकार से पवित्र तम्बू में पवित्र स्थान, स्वर्ग के पवित्र स्थान का ही चित्र था, ठीक उसी प्रकार जल प्रलय का जल, बपतिस्मे का सचमुच प्रतिनिधित्व करता है।

यह स्पष्ट है कि नूह और उसका परिवार पानी में रहने के कारण नहीं बचे, किंतु जलयान में आने के कारण। जलयान मसीह की ओर संकेत है। (उत्पत्ति 7:24) जल ने उन्हें नहीं बचाया, किंतु जल के द्वारा वे बचाए गए थे (पद 20)। इब्रा. 11:7 स्पष्ट रीति से बताता है कि वे विश्वास के द्वारा बच गए।

क्योंकि जलप्रलय का जल बपतिस्मे को दिखाता है, कोई यह कैसे सोच सकता है कि बपतिस्मे की विधि स्वयं किसी को बचा सकती है? यदि हम सोचते हैं कि जलप्रलय के जल ने नूह और उसके परिवार को बचाया, तभी हमें यह मानना चाहिये कि बपतिस्मा किसी को बचा सकता है।

मुक्ति और नये जीवन के लिये हम पहले मसीह में आते हैं, जो हमारा जलयान है। उद्धार के पश्चात् ही हम बपतिस्मे के लिये पानी में उतरते हैं। तुलना करें, मरकुस 16:16. यदि हम मसीह में नहीं हैं, उद्धार नहीं पा चुके हैं, हमें बपतिस्मा नहीं लेना चाहिये। बपतिस्मा मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और हमारे उसके साथ एक होने की तस्वीर है। बाईबल स्पष्ट बताती है कि हमें क्या बचाता है।

परम पिता अपनी दया से हमें बचाते है - तीतुस 3:4-5.

यीशु बचाते हैं - मत्ती 1:21; रोमि. 5:9-10.

यीशु का रक्त हमें बचाता है - इफ़ि. 1:7.

यीशु का बलिदान हमें बचाता है - इब्रा. 10:10,14.

विश्वास और अनुग्रह के द्वारा हम बचाए जाते हैं - इफ़ि. 2:8-9; प्रे.काम 16:31; रोमि. 3:22-25; यूहन्ना 5:24; इब्रा. 10:39.

सुसमाचार पर विश्वास लाने के द्वारा हम बचाए जाते हैं - 1 कुरि. 15:1-4; प्रे.काम 10:44-47.

पतरस कहता है कि परमेश्वर की महान करूणा है, कि हमें नए जन्म मिला ताकि हम जीवित आशा प्राप्त करें 1:3 और यह भी कि हमारे विश्वास का लक्ष्य हमारा उद्धार है - 1:9.

"देह की गंदगी साफ़"- पतरस कहता है कि बपतिस्मा इसलिए नहीं है। यूनानी शब्द शरीर के अनेक अर्थ हैं - मानवीय देह भी और मनुष्य के भीतर पापी (गिरा हुआ) स्वभाव भी। बपतिस्मे का सम्बंध इन दोनों से नहीं है। इसका सम्बंध भीतर व्यक्ति से है - "शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाना" । तुलना करें इब्रा. 9:14, जहाँ हम पाते हैं कि मसीह का खून हमारे विवेक को शुद्ध करता है। बपतिस्मा सार्वजनिक घोषणा है

की अपील है। यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने की वजह से 22जो स्वर्ग पहुँचकर परमेश्वर के साथ सारे अधिकार के साथ विराजमान हैं स्वर्गदूत, प्रधानताएँ एवं ताकतें उनके आधीन हैं।

4 इसलिए जब कि मसीह ने देह में होकर दुख उठाया, तो तुम भी इसी रवैये (मन) को हथियार की तरह ले लो। इसलिए कि जिसने देह में दुख उठाया है, वह गुनाह से आज़ाद हो गया है। 2इसलिए इस देह में अपनी बाकी ज़िन्दगी मनुष्यों की अभिलाषाओं में नहीं, लेकिन परमेश्वरीय इच्छा के अनुसार बिताओ। 3क्योंकि दुनियावी लोगों की शैली - जैसे कामुकता, पियक्कड़पन, रंगरेलियाँ, मद्यपान गोष्ठियाँ तथा घृणित मूर्तिपूजा में जो तुम ने समय गँवाया, वही बहुत हुआ। 4इन सब बातों में उनको आश्चर्य होता है कि तुम ऐसे भारी बुरे कामों में अब उनका साथ नहीं देते हो, इसलिए वे तुम्हारी निन्दा करते हैं। 5लेकिन यीशु जो जीवित और मरे हुओं का न्याय करेंगे, उन्हीं यीशु के सामने उन लोगों को अपनी करनी का हिसाब देना पड़ेगा। 6क्योंकि मर चुके लोगों को भी खुशी की खबर इसलिए सुनायी गयी

कि परमेश्वर की इच्छानुसार वे अब से जीवन बिताएँगे और अपने विवेक को न ही अपवित्र करेंगे, न ही शान्त करेंगे। जिस प्रकार से यहूदी को खतना उद्धार नहीं दे सकता था, ठीक इसी प्रकार से बपतिस्मे से किसी को पाप क्षमा नहीं मिलती है - देखें रोमि. 2:28-29. मसीह के प्रति भरोसेमंद आधीनता आवश्यक है जो बपतिस्मा दिखाता है। रोमि. 4:25 से तुलना करें। हम मसीह के जी उठने के द्वारा बचाए गये हैं।

3:22 प्रे.काम 2:33; इफ़ि. 1:20-21; फ़िलि. 2:9-11; इब्रा. 1:3.

4:1-2 मसीह ने हमें पाप से छुड़ाने के लिये दुख उठाया (2:24; 3:18)। हमें पाप से मुठभेड़ के लिये कष्ट उठाने को तैयार रहना चाहिये। यदि हम इस रवैये को बनाकर रखेंगे तो यह हमारे संघर्ष में एक हथियार होगा। मसीह पाप के लिये मर गए। विश्वासियों को मसीह के साथ एकता को पहचानना चाहिये और इसलिए भी कि मसीह में वे पाप के लिये मर चुके हैं (रोमि. 6:5-13; कुल. 3:3 देखें)। मसीह यीशु के दुखों के प्रकाश में हमें पाप से किनारा कर लेना चाहिये। अपनी इच्छा पूरी करने नहीं, किंतु पिता की इच्छा पूरी करने के लिये हमें जीना चाहिये (रोमि. 8:5,12; 12:1-2; कुल. 1:9; 4:12; 1 थिस्स. 4:3; इब्रा. 13:21)।

4:3 तीतुस 3:3; 1 तीमु. 1:13; इफ़ि. 2:1-3; 1 कुरि. 6:11 से तुलना करें। मसीह का समाचार पाप की गहराई तक पहुँचता है और सदा के लिये लोगों को बदल डालता है। यह जानें कि मूर्तिपूजक धर्म और यहाँ वर्णित जीवनशैली साथ-साथ हो सकती है।

"घृणित मूर्तिपूजा"- व्यव. 7:25; 12:31; 13:12-14; 17:2-5; 27:15; 29:17; 32:16.

4:4 ऐसे विश्वासियों का पवित्र जीवन जिन्होंने पुराना जीवन छोड़ दिया है, पुराने जीवन में बने रहने वालों के लिये एक प्रकार से डांट है। अधर्म का जीवन जीने वालों के लिये आंशिक रीति से यही बदनामी का कारण है। देखें मत्ती 12:36; प्रे. काम 10:42; 17:31; रोमि. 2:16; 14:12; 2 तीमु. 4:1; इब्रा. 4:13.

4:5 "लेखा" या "हिसाब-किताब" - रोमि. 14:12 आदि।

4:6 यह भी एक कठिन पद है। कुछ लोगों के लिये इसका अर्थ वे मृतक लोग हैं जिन्हें उस समय सुसमाचार सुनाया गया था जब वे इस पृथ्वी पर थे। उनके और हमारे लिये जो जीवित हैं उद्देश्य एक ही था और वह यह कि उन्हें आत्मिक जीवन मिले और वे 'परमेश्वर की इच्छा' के लिये जीवित रह सकें। पद 2. कुछ लोग इस पद का अर्थ यह लगाते हैं कि जिन लोगों को सुसमाचार सुनने का इस पृथ्वी पर अवसर नहीं मिला, मृत्यु के पश्चात् उन्हें अवसर दिया गया था। वे इस पद का सम्बंध 3:19 से लगाते हैं और यह मानते हैं कि यहाँ 'आत्माओं' का अर्थ उन लोगों की आत्मा से है जो मर चुके हैं। किंतु बाईबल में किसी और पुस्तक में ऐसी शिक्षा नहीं है और मनुष्य के विचार पर आधारित शिक्षा को हमें महत्व नहीं देना चाहिये जो कि इधर उधर कुछ पदों या अंशों पर आधारित है। यदि ऐसी कोई शिक्षा सत्य भी है तो मालूम नहीं। हम वह जानते हैं, जो प्रगट किया गया है, देखें व्यव. 29:29 में। दूसरे अन्य लोग सिखाते हैं कि मरे हुओं का अर्थ है, पापों और अपराधों में मरे हुए (इफ़ि. 2:1), किंतु यहाँ पर यह अर्थ सत्य नहीं लगता है।

ताकि देह में तो उनका न्याय मनुष्यों के
अनुसार हो, लेकिन आत्मा में वे परमेश्वर
के मुताबिक जीएँ।
7सब कुछ जल्दी (अचानक) खत्म होने
वाला है इसलिए समझदार होकर प्रार्थना में
लगे रहो। 8प्रेम अनगिनित गुनाहों को ढाँप
देता है, इसलिए एक दूसरे से प्रेम रखना
सब से बड़ी बात होगी। 9एक दूसरे की
पहुनाई बिना कुड़कुड़ाए करो 10जिसको
जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर
की तरह-तरह की कृपा के भले भण्डारियों
के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए।
11जिसको सिखाने का काम मिला है वह
ऐसा बोले जैसे कि परमेश्वर ही उसके
माध्यम से बोल रहे हैं। यदि तुम्हें दूसरों
की मदद करने की योग्यता मिली है, तो
परमेश्वर से प्राप्त सारी शक्ति से ऐसा करो।
तब यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को हर

4:7 "अचानक"- रोमि. 13:12; 5:9; प्रका. 1:3; याकूब 5:8; 2 पतर. 3:8-9; मत्ती 24:36,42. इस युग के अन्त में बड़ी समस्याएँ, परीक्षाएँ और बड़ा धोखा (मत्ती 24:4-14,21-25) होगा। मसीह के लिये सच्चाई से स्थिर रहने के लिये प्रार्थना अत्याधिक आवश्यक है। यहाँ सच्ची प्रार्थना के लिये दो गुण आवश्यक हैं। तुलना करें, लूका 21:36; 22:40,46.

"समझदार होकर"- यूनानी भाषा ऐसे मन की ओर संकेत करती है जो स्वस्थ है, बेकार के और भ्रष्ट विचारों से अलग है, एक ऐसा मन जो हर तरह से स्वस्थ है।

4:8 "प्रेम"- 1:22; यूहन्ना 13:34; 15:12,17; 1 यूहन्ना 3:11,18; 4:8. पतरस यूनानी शब्द को ईश्वरीय प्रेम के लिये उपयोग करता है 1 कुरि. 13:1.

"ढाँप"- इसका अर्थ समझाये जाने की आवश्यकता है, कि अर्थ क्या है, और क्या नहीं। पतरस कलीसियाई अनुशासन के सम्बंध में या जिस पाप का खुलासा कर दूर करने की आवश्यकता बताता है, उसके विषय में नहीं कह रहा है। तुलना करें मत्ती 18:15-17; प्रे. काम 5:1-11; 1 कुरि. 5:1-5,12,13. पतरस यह दिखाना चाह रहा है कि हमारे आपसी सम्बंधों में प्रेम की क्या भूमिका है। नीति. 10:12 देखें। प्रेम दूसरों के पापों को प्रगट नहीं करता है। यह किसी को शर्मिन्दा महसूस नहीं कराता, न ही दोष लगाता है। यह अपना भरसक प्रयत्न कर के परमेश्वर की ओर ध्यान कराता है, जो वास्तव में पाप को ढाँपता है (तुलना करें, भजन 32:1-2; रोमि. 4:6-8; याकूब 5:20)।

पतरस विश्वासियों को यह भी स्मरण दिला रहा होगा कि प्रेम क्षमा करेगा और करता रहेगा (1 कुरि. 13:5; मत्ती 18:21-22)। उसका यह अर्थ भी हो सकता है कि यदि हमारे पास प्रेम है तो परमेश्वर हमारे असंख्य (अनगिनित) अपराधों को क्षमा करता है (तुलना करें, लूका 7:47-50)। यह प्रेम जहाँ कहीं भी दिखे, उनके लक्षण को भी दिखाता है। अलौकिक प्रेम सब पापों को ढाँकने के लिये ऐसा मार्ग ढूँढता है जो परमेश्वर के न्याय और पवित्राता के अनुकूल है। तुलना करें, उत्पत्ति 3:21; 9:21-23; प्रका. 3:18-19. यह सत्य है कि प्रेम दूसरों के पापों को नहीं ढाँकेगा, यदि यह उनके लिये हानिकारक है या इस से उन्हें पाप में बने रहने के लिये प्रोत्साहन मिलता है। प्रेम सदैव पापियों को इस स्थान पर लाना चाहेगा, जिससे वे अपने पापों को छोड़ दें (तुलना करें, नीति. 28:13)। वास्तविक प्रेम पाप को किसी भी प्रकार से प्रोत्साहित नहीं करेगा।

4:9 रोमि. 12:13; 16:23; इब्रा. 3:2; 3 यूहन्ना 8.

4:10 "भले"- रोमि. 12:6-8; 1 कुरि. 12:4-11; इफ़ि. 4:7-13.

"भले भण्डारियों"- मत्ती 24:45-47; 1 कुरि. 4:1-2.

"एक दूसरे की सेवा में"- जो लोग प्रेम करते हैं, वे अपनी योग्यताओं को व्यक्तिगत् विकास, धन और प्रसिद्धी में न लगाकर दूसरों की सहायता में लगाते हैं।

4:11 "बोले"- बाईबल का उपयोग कर के किसी भी बोले जाने वाली सेवा की ओर संकेत करता है। जो लोग ऐसा करते हैं, उन्हें मसीह के स्थान में उसके प्रतिनिधि और राजदूत के रूप में अधिकार के साथ वचन बोलने के विषय में जागरूक रहना चाहिये।

बात में प्रशंसा और सम्मान मिलेगा। सारी महिमा (शान) और अधिकार उन्हीं का है। ऐसा ही हो।

12प्रियो, दुख रूपी आग-परीक्षा जिसमें से होकर तुम्हें जाना पड़ रहा है, उसके कारण यह समझकर आश्चर्यचकित न हो कि तुम्हारे साथ कुछ अजीब बातें हो रही हैं। 13इसके बजाए, तुम्हें खुश होना चाहिए, क्योंकि इन मुश्किल परिस्थितियों में से गुज़रने से तुम मसीह के साथ उनके दुखों में हिस्सेदार बनोगे। बाद में सारी दुनिया के सामने उनकी अनोखी महिमा के प्रगट होने पर तुम्हें बड़ी खुशी होगी। 14यदि यीशु मसीह के कहलाए जाने की वजह से तुम्हें शर्मिन्दा किया जाए, तो खुश होना क्योंकि महिमा का आत्मा जो परमेश्वर का आत्मा है तुम में रहता है। 15किसी भी तरह से तुम में कोई खूनी, चोर, दुष्टता का काम करने वाला और दूसरों के कामों में दखल देने वाला होने की वजह से दुख न उठाए। 16लेकिन यदि कोई मसीही होने के कारण दुख उठाए, तो शर्मिन्दा न हो, लेकिन अपने इस नाम के लिए परमेश्वर की महिमा करे। 17समय आ चुका है कि परमेश्वर के घर से ही इन्साफ़ शुरू हो। इसलिए अगर इन्साफ़ की शुरूवात ही हम से होगी तो उन लोगों का क्या होगा जिन्होंने परमेश्वर के सुसमाचार को नहीं अपनाया? 18यीशु के लोगों के लिए उनके विश्वास के कारण इस दुनिया के जीवन को खतम करके भविष्य के जीवन में दाखिल होने

"परमेश्वर...सम्मान"- सब प्रकार की सेवा का लक्ष्य यही होना चाहिये। जो लोग अपनी महिमा के लिये बोलते हैं, सेवा करते हैं, वे परमेश्वर की उस महिमा को ले रहे हैं जो उसकी है। तुलना करें, मत्ती 6:2,5; 1 कुरि. 10:31.

4:12 "आग"- पतरस आग से परखे जाने के विषय कहता है - यह वह प्रक्रिया है जिससे किसी धातु को शुद्ध किया जाता है। देखें 1:7; भजन 66:10. प्रभु आग समान समस्याओं को अनुमति देता है ताकि हमें परखें।

"आश्चर्यचकित- मसीह और प्रेरितों ने पहले से चेतावनी दी थी कि समस्याएं और सताव होगा (2:20-21; 4:1; यूहन्ना 16:23; प्रे.काम 14:22; रोमि. 8:17; 2 तीमु. 3:12)।

4:13 "खुश"- मत्ती 5:11-12; प्रे.काम 5:41; रोमि. 5:3; कुल. 1:24; याकूब 1:2. परखे जाने के समय यह प्रभु का निर्देश है। इन परीक्षाओं के प्रति हमारा रवैया महत्वपूर्ण है। कुड़कुड़ाने या निराश होने के विपरीत, हम भरोसा रखें और आनन्दित हों कि वह हमारी भलाई के लिये सब कुछ करेंगे। आग की तरह की कठिनाइयों (सताव) को सहना मसीह के दुखों में हिस्सा लेना है (2 कुरि. 1:5)।

"महिमा के प्रगट होने पर"- तीतुस 2:13. हमारी परख और दुखों के लिये हमें तब पुरस्कृत किया जाएगा (रोमि. 8:17-18; 2 कुरि. 4:17-18)।

4:14 "खुश होना"- लूका 6:22 देखें। ये उस अपमान के विषय में सत्य है जो मसीह में हमारे विश्वासी होने के कारण हमें झेलने पड़ते हैं, न कि दूसरे कष्ट जो दूसरे कारणों से हमारे जीवन में आते हैं।

"महिमा का आत्मा"- परम पिता का आत्मा महिमा के स्वर्ग से आता है और विश्वासियों को वहीं ले जाता है। अब वह उनके ऊपर है (प्रे.काम 1:8; 1 यूहन्ना 2:20) और धीरज से मसीह के लिये कष्ट एवं लज्जा सहने का चिन्ह है।

4:15-16 देखें 2:19-20.

"दुख न उठाए"- प्रे.काम 5:41; इब्रा. 11:26 की तुलना करें। उसके नाम के लिये मसीहियों को दुख क्यों सहना है? हम ऐसे संसार ही में रहते हैं (यूहन्ना 15:18-25; 16:1-4)। संसार जानबूझकर अंधकार में है और आत्मिक प्रकाश से घृणा करता है (यूहन्ना 3:19-20)।

4:17 "घर"- गल. 6:10; इफ़ि. 2:19.

"इन्साफ़"- 1 कुरि. 11:31-32; 2 थिस्स. 1:5. परमेश्वर विश्वासियों का न्याय करते हैं, अनुशासन करते हैं ताकि संसार के साथ वे दोषी न ठहरें।

"नहीं अपनाया"- यूहन्ना 3:36; 2 थिस्स. 1:8-9; प्रे.काम 22:10 की टिप्पणी देखें।

4:18 नीति. 11:31.

तक बहुत दुख हैं तो मसीह का इन्कार करने वाले भविष्य के जीवन के दुख (न्याय) को कैसे सह पाएँगे?

19इसलिए वे भी जो परमेश्वर की इच्छानुसार दुख उठाते हैं, सही चाल चलते हुए अपने आपको विश्वासयोग्य सृजनहार के सुपुर्द कर दें।

5 तुम्हारे यहाँ के बुज़ुर्ग अगुवों के समान मैं भी मसीह की पीड़ाओं का गवाह रहा हूँ, और आने वाली महिमा का भी हिस्सेदार हूँ, तुम्हारे अगुवों को दिलासा दिलाना चाहता हूँ, 2कि वहाँ के परमेश्वर के लोगों की रखवाली करो। यह भी इसलिए नहीं कि करना है या इस से कुछ आमदनी हो जाएगी लेकिन परमेश्वर के मार्गदर्शन में खुशी से। 3जिन लोगों की देख-रेख करनी है, उन पर ज़ोर ज़बरदस्ती न करो, लेकिन सभी के लिए नमूना बनो। 4जब प्रधान रखवाले का आना होगा, तुम्हें

"बहुत दुख हैं"- मरकुस 10:24. इसलिये क्योंकि उनके शत्रु ढेर सारे और बलवान हैं - 5:8; इफ़ि. 6:11-12.

वे निर्बल हैं और उन में पापी स्वभाव है - रोमि. 6:19; 7:18; 8:26; गल. 5:16-17; 1 यूहन्ना 1:8.

बोने और काटने के सिद्धान्त से विश्वासी बच नहीं सकते - रोमि. 2:6-8; गल. 6:7-8.

परमेश्वर को चाहिये कि उन्हें व्यवहार में भी खरा बनाए। परमेश्वर का स्तर ऊँचा है। उन्हों ने अपने लोगों के लिये कुछ सिद्धान्त रख छोड़े हैं, जिनका पालन किया जाना आवश्यक है। वे न केवल सकरे द्वार से प्रवेश करते हैं, उन्हें सकरे रास्ते पर चलना भी है (मत्ती 7:13-14)।

उन्हें अपनी इच्छा तज कर पिता की इच्छा को पूरा करना चाहिये (मत्ती 7:21) और सब कुछ छोड़कर मसीह की बातों को मानना चाहिये (लूका 14:33)।

उन्हें पवित्रता को अपनाना चाहिये (यूहन्ना 10:27; इब्रा. 12:6)।

बड़े परखे जाने और अनुशासन से होकर उन्हें सुरक्षित आना चाहिये (इब्रा. 12:5-13) और अन्त तक उन्हें विश्वास में बने रहना चाहिये (इब्रा. 10:38-39)।

किंतु, हालांकि जीवन में उतार चढाव हैं, विश्वास से बचाये जा चुके हैं। (1:5; यूहन्ना 6:39; 10:28; रोमि. 5:9-10)।

"मसीह...वाले"- विश्वास को विश्वास को छोड़ देने वालों के लिये कोई आशा नहीं।

4:19 "सही चाल"- 2:12,15; 3:11; रोमि. 2:7; 2 कुरि. 5:10; 9:8; गल. 6:9-10; इफ़ि. 2:10; कुल. 1:10; 2 तीमु. 3:17; तीतुस 2:14. परखे जाने, बदनाम किए जाने, सताव या परमेश्वर द्वारा अनुशासित किए जाने के कारण दूसरों की भलाई करना रोक नहीं देना चाहिये।

"सुपुर्द कर दें"-5:7; भजन 31:5; 37:5; प्रे. काम 20:32.

5:1 "बुज़ुर्ग अगुवों"- प्रे.काम 14:23; 15:2; 20:17; 1 तीमु. 4:14; 5:17; तीतुस 1:5.

"गवाह"- प्रथम प्रेरितों में से पतरस एक था।

"आने वाली महिमा"- रोमि. 8:17-18.

5:2-4 यहाँ हम देखते हैं कि "प्राचीन" (यूनानी "प्रेसबिट्रौस") को रखवाली का कार्य करना है (2 तीमु. 3:1; यूनानी में एपिस्कोपोस) - यहाँ स्पष्ट है कि पतरस दोनों शब्दों को समानांतर देख रहा है। प्राचीनों या रखवालों में आवश्यक योग्यताओं को देखें (1 तीमु. 3:1-7 और तीतुस 1:5-9 में देखें)। मसीह प्रधान रखवाले हैं और उन्हों ने स्थानीय कलीसियाओं की देखरेख के लिये अगुवों को नियुक्त किया है - प्रे.काम 20:28. मसीह ने अपने लोगों की देखभाल की जिम्मेदारी उन्हीं अगुवों के सुपुर्द की है और उन्हें अपना हिसाब किताब मसीह को देना पड़ेगा। जिस तरह का रखवाला वह उन्हें बनाना चाहते हैं, उस तरह का रखवाला बनना यह उनकी जिम्मेदारी है। तुलना करें, 2:21; यशा. 56:10-11; यिर्म. 3:15; 10:21; 12:10; 23:1-4; यहेज. 34:2-10.

"आमदनी"- मत्ती 6:24; 1 तीमु. 6:8-10; तीतुस 1:7.

"खुशी से"- तीतुस 2:14.

5:3 "नमूना"- 1 कुरि. 11:1; फ़िलि. 3:17; 2 थिस्स. 3:7; 1 तीमु. 4:12; तीतुस 2:7.

5:4 "आना होगा"- मत्ती 24:30; तीतुस 2:13; इब्रा. 9:28; प्रका. 22:12.

इतना शानदार ताज दिया जाएगा, जो कभी मुरझाता नहीं है।

5इसी तरह से नवजवानो, तुम भी अपने अगुवों की मानो। तुम सभी एक दूसरे के प्रति दीनता और नम्रता का बर्ताव करो, इसलिए कि "परमेश्वर घमण्डी का मुकाबला करते हैं, लेकिन नम्र इन्सान के पक्ष में काम करते हैं।"

6इसलिए शक्तिशाली परमेश्वर की आधीनता में नम्रता से जीना सीखो ताकि सही समय पर वह तुम्हें बढ़ाएँ। 7अपनी सारी चिन्ताओं को उन्हीं पर डाल दो, क्योंकि तुम्हारी देखभाल वही करते हैं।

8अपने आपको काबू में रखो और सचेत रहो, क्योंकि तुम्हारा दुश्मन शैतान गर्जने वाले शेर की तरह इस तलाश में रहता है, कि किसको अपना निशाना बनाए। 9अपने विश्वास में मज़बूत रहकर उसका मुकाबला करो और यह जान लो कि तुम्हारे भाई जो इस दुनिया में हैं, इसी तरह की पीड़ा सह

"ताज"- फ़िलि. 4:1; 1 थिस्स. 2:19; 2 तीमु. 2:5; 4:8; याकूब 1:12; विश्वासयोग्य अगुवों के लिये अद्‌भुत पुरस्कारों का प्रबंध है।

"मुरझाता नहीं"- 1 कुरि. 9:25.

5:5 "की मानो"- 2:13,18; 3:1; 1 कुरि. 16:16; इफ़ि. 5:21; याकूब 3:17; 4:7.

"दीनता"- नीति. 11:2; 15:33; सप. 2:3; फ़िलि. 2:3; कुल. 3:12; तीतुस 3:2; याकूब 3:13; मत्ती 5:13; 11:29. दीनता का एक चिन्ह अपने आपको कुछ न समझना और इस बात के लिये तैयार रहना है कि दूसरे लोग हमें कुछ भी न समझें। इस में पहली बात दूसरी से आसान है।

"घमण्डी"- याकूब 4:6 क्या हम चाहते हैं कि स्वर्गिक पिता हमारा विरोध करे? यहाँ एक मार्ग है। घमण्ड के कारण हम परमेश्वर की उस सहायता को प्राप्त नहीं कर सकते, जिसे वह दीन लोगों को देते हैं। मसीह जीवन में असफ़लता और हार की जड़ यही है।

5:6 याकूब 4:10.

"सही समय"- वह नवजवानों ही से बातचीत कर रहा है (पद 5)। उचित समय वह नहीं होता है जिसे हम समझते हैं किंतु जिसे स्वर्गिक पिता समझते हैं। नवजवानों को छोटी-छोटी बातों में न ही घबरा जाना चाहिये और न ही अपनी बात पर अड़ना चाहिये, वे छोटी-छोटी बातों में अपने विश्वासी होने का प्रमाण दें (लूका 16:10)। इस परमेश्वर द्वारा तरीके और समय के चुनाव के लिये प्रभु का इन्तज़ार करें(भजन 75:4,7; 31:15)।

5:7 भजन 55:22; मत्ती 6:33-34; फ़िलि. 4:6-7.

"देखभाल"- मत्ती 6:30; इब्रा. 2:6-8; फ़िलि. 4:19. परमेश्वर हमारे विषय में सोचते हैं, जिस प्रकार से पिता बच्चों के विषय में सोचते हैं। चिंतित रहने का अर्थ है अपने आपको पीड़ित करना और उसका निरादर करना। अपनी चिंताओं को उन पर डालने का अर्थ है, उनके पास बोझ को लाना। उसकी भलाई, बुराई, बुद्धि और समझ पर भरोसा रखना कि वह हमारी भलाई के लिये सब कुछ करेंगे।

5:8 "काबू में"- यूनानी शब्द का अर्थ है "सचेत हो" किंतु इसका अर्थ आत्म संयमी या सतर्क है - किसी ऐसी बात से प्रभावित नहीं होना जो मसीही जीवन के प्रतिकूल है। 1:13; 4:7; नीति. 25:28; गल. 5:23; 1 थिस्स. 5:6-8; 2 पतर. 1:6.

"सचेत रहो"- इफ़ि. 6:18; 1 थिस्स. 5:6. शैतान उन लोगों को पकड़ सकता है जो आत्मिक रीति से सो रहे हैं या अपने में लिप्त हैं। मत्ती 4:1 में शैतान पर टिप्पणी देखें। इसलिए कि परमेश्वर के समान एक ही समय में वह सब जगह नहीं हो सकता, उसे इधर उधर भ्रमण करना पड़ता है। हालांकि वह शेर के समान आता है, किंतु जब विश्वासयोग्य विश्वासियों का साम्हना करता है तब वह डर जाता है (याकूब 4:7) और वे उसे पैरों से रौंद सकते हैं (भजन 91:13)।

5:9 "उसका मुकाबला करो"- इफ़ि. 6:10-18. यदि उसका साम्हना डट कर करते हैं तो यह आवश्यक नहीं कि हम परीक्षा या शैतान की चाल में फँसे (1 यूहन्ना 4:4; 1 कुरि. 10:13)।

"पीड़ा"- जब हमारी परीक्षा या परख होती है, हमें ऐसा प्रतीत हो सकता है कि हम अकेले हैं, किंतु ऐसा नहीं है। सभी विश्वासियों को इसका साम्हना करना पड़ता है।

रहे हैं। 10तुम्हारी थोड़ी देर के कष्ट सहने के बाद सारी कृपा के परमेश्वर जिन्होंने तुम्हें मसीह में अपनी युगानुयुग की महिमा के लिए बुलाया है, खुद ही तुम्हें सिद्ध, मजबूत, बलवन्त और स्थिर कर देंगे। 11उन्हें महिमा और प्रभुता सदा मिलती रहे। ऐसा ही हो!

12मैंने सिलवानुस के हाथ, जिसे मैं विश्वसनीय भाई समझता हूँ, थोड़ा सा लिखकर तुम्हें समझाया है और यह गवाही दी है कि परमेश्वर की सच्ची कृपा यही है, इसी में बने रहो।

13वह जो तुम्हारे साथ चुनी गई है और बेबिलोन (इराक) में है, और मेरा बेटा मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं

14प्रेम और आदर से एक दूसरे से मिलो। तुम सभी को जो, यीशु को अपना चुके हो, शान्ति मिले।

5:10 "कष्ट सहने के बाद"- 1:6; 4:1,12. दुख के बाद महिमा, ऐसा मसीह के साथ हुआ (1:11)। यही तरीका विश्वासियों (शिष्यों) के लिये परमेश्वर ने नियुक्त किया है। जो लोग परीक्षा और कष्टों में से होकर जा रहे हैं उनके लिये प्रभु क्या करेंगे यह देखें। भजन 66:12 से तुलना करें। हमें उन में से सुरक्षित बाहर लाने की और पहले से अधिक बलवान बनाने की वह प्रतिज्ञा करते हैं।

"कृपा"- यूहन्ना 1:14,16,17; प्रे.काम 15:11; 20:24,32; रोमि. 1:7; 3:24; 5:21; 2 कुरि. 8:9; 9:8; इफ़ि. 2:8-10.

"मसीह में"- रोमि. 6:3-8 की टिप्पणी देखें; इफ़ि. 1:1,3.

"महिमा"- यूहन्ना 17:24; रोमि. 5:2; 8:17.

"बुलाया"- 2:9; 3:9; रोमि. 1:6-7; 8:28-30; 11:29; इफ़ि. 4:1; इब्रा. 3:1; 2 पतर. 1:10.

5:12 "सिलवानुस के हाथ"- तुलना करें रोमि. 16:22; 1 कुरि. 1:1; 2 कुरि. 1:1; फ़िलि. 1:1; कुल. 1:1. सिलवानुस और सिलास एक ही व्यक्ति हैं - प्रे.काम 15:22; 2 कुरि. 1:19; 1 थिस्स. 1:1.

"परमेश्वर की सच्ची कृपा"- इस पूरे पत्र में 'पिता की कृपा' अनेक विषयों में से एक महत्वपूर्ण विषय है - 1:2,10,13; 4:10; 5:5,10. मात्रा परमेश्वर की कृपा से उद्धार मिलता है और इसी कृपा के कारण उद्धार पाए हुए लोग महिमा प्राप्त करते हैं।

5:13 "जो बेबिलोन (इराक) में हैं"- उत्पत्ति 10:10; 2 राजा 17:24; यशा. 13:1; यिर्म. 50-52 अध्याय। मिस्त्र में उस समय बाबुल नामक एक मिलिट्री स्टेशन (सेना की छावनी) भी था। बहुत से टीकाकार सोचते हैं कि पतरस रोम की ओर संकेत कर रहा था, किंतु इसका कोई सबूत नहीं है। किंतु यदि उसने रोम से लिखा, तो प्रश्न यह है कि साफ़-साफ़ उसने क्यों नहीं कह दिया?

"मरकुस"- प्रे.काम 12:12,25; कुल. 4:10; 2 तीमु. 4:11. पतरस मरकुस को अपना आत्मिक पुत्र समझता था। तुलना करें 1 तीमु. 1:2.

5:14 "प्रेम"- अलौकिक प्रेम - अगापे - 1 कुरि. 13:1 की टिप्पणी देखें।

"से मिलो"- रोमि. 16:16; 1 कुरि. 16:20.

"शान्ति"- लूका 1:79; 2:14; यूहन्ना 14:27; रोमि. 1:7. जो मसीह में नहीं है उसके पास सच्ची शान्ति हो ही नहीं सकती।